दिखावा नहीं होना चाहिये

मुहम्मद अज़हर मदनी

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क़्यामत के दिन सबसे पहले ऐसे शख्स का फैसला किया जाएगा जिसने शहादत पाई होगी। जब उसे लाया जाएगा तो उससे नेमतों की पहचान कराई जाएगी वह इन नेमतों को स्वीकार कर लेगा। अल्लाह तआला इससे पूछेगा तूने इसके लिये कया किया? वह कहेगा मैंने तेरी राह में क़िताल किया (सत्य का साथ दिया और असहाय और मजलूमों की मदद की) यहां तक कि शहीद हो गया। अल्लाह तआला कहेगा तू झूठ बोल रहा है तूने तो इसलिये क़िताल किया कि तुझे बहादुर कहा जाए और तुझे बहादुर कहा भी गया फिर हुक्म होगा तो उसे चेहरे के बल घसीट कर नरक में डाल दिया जागए। दूसरा वह शख्स हो गा जिसने दीन का ज्ञान हासिल किया होगा और दूसरों को इसे सिखाया होगा और इस ने कुरआन को पढ़ा होगा। वह लाया जाएगा तो उसे नेमतों को याद दिलाया जाएगा वह शख्स भी नेमतों को पहचान लेगा। अल्लाह तआला उससे पूछेगाः तूने इसके लिये क्या किया? वह कहेगा मैंने ज्ञान प्राप्त करके दूसरों को सिखाया और तेरे लिये पवित्र कुरआन को पढ़ा। अल्लाह तआला कहेगा तू झूठ बोलता है तुम ने ज्ञान इस लिये हासिल किया था ताकि तुझे ज्ञानी कहा जाये और कुरआन इसलिये पढ़ा था कि तुझे कारी कहा जाए और दुनिया में तुझे (आलिम व क़ारी) कहा भी गया फिर हुक्म होने पर इसे चेहरे के बल घसीट कर नरक में डाल दिया जाएगा और तीसरा ऐसा शख्स हो गा जिसे अल्लाह ने हर तरह के माल व दौलत से नवाज़ा होगा इसको भी लाया जायेगा इसको नेमतों के बारे में याद दिलाया जायेगा जब वह नेमतों को स्वीकार कर लेगा तो अल्लाह तआला इससे पूछेगा तूने इसके लिये क्या किया? वह कहेगा मैंने कोई ऐसी राह नहीं छोड़ी जिस में तूने खर्च करने को पसन्द करता है। अल्लाह तआला फरमायेगा तू झूठा है तू तो केवल इस लिये खर्च किया कि तुझे दानवीर कहा जाये तुझे दुनिया में दानवीर भी कहा गया फिर हुक्म होगा तो उसको उसके चेहरे के बल घसीट कर नरक में डाल दिया जायेगा।'' (सहीह मुस्लिम १६०५)

इबादत में इख्लास का होना अहमतरीन शर्त है, अल्लाह की रिज़ा और खुशी को पाने के लिये कोई भी कर्म करते हुए इसमें दिखावे की सोच और ख्याल दिल में नहीं होना चाहिए, कोई भी इबादत अल्लाह के नजदीक उसी वक़्त कुबूल होगी जब उसमें दिखावा न हो, उपर्युक्त हदीस में बन्दे को यही नसीहत की गई है कि बन्दे का नेक से नेक काम क्यामत के दिन व्यर्थ साबित होगा जिस में दिखावा पाया जाये गा उस दिन अल्लाह तआला बन्दे के ऊपर स्पष्ट कर देगा कि उसका कौन-कौन सा कर्म दिखावे के लिये था। अल्लाह तआला हम लोगों को नेक काम करते समय दिखावे से बचने की क्षमता दे।

मासिक

इसलाहे समाज

जुलाई 2023 वर्ष 34 अंक 7

मुहर्रमुल हराम 1445 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. दिखावा नहीं होना चाहिये 2
2. भाईचारा, उदारता और सदभावना का सन्देश 4
3. इस्लाम धर्म में लड़कियों के अधिकार 8
4. पवित्र कुरआन की फज़ीलत 11
5. अल्लाह का ज़िक्र करने का फायदा 17
6. कुरआन में सदव्यवहार की शिक्षाएं 19
7. प्रशिक्षण की महत्ता 22
8. मुहताजों का पालन पोषण 24
9. दहेज की समस्या 25
10. गांव महल्ला में मकातिब कायम कीजिये 27
11. अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन) 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- www.ahlehadees.org

सम्पादकीय

भाईचारा, उदारता और सदभावना का सन्देश

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

यूँ तो भारत-सऊदी अरब संबन्ध एक सुगम इतिहासिक हक़ीक़त है और इनकी जड़ें प्राचीनकाल से स्थापित हैं लेकिन मौजूदा दौर में इन प्राचीन संबन्धों में जो सक्रियता और मज़बूती आई है वह हर दो दोस्त देश के लिये बड़ी हर्षपूर्ण बात है। हर रोज़ व्यवपार, संस्कृति और अनुभव के विनियम के नये-नये अध्याय खुल रहे हैं। सऊदी अरब के शासक और सऊदी के युवराज का भारत का दौरा और भारत के प्रधानमंत्री सहित सऊदी के प्रमुखों के सऊदी के दौरे इस प्राचीन सुगम दोस्ताना संबन्धों में मील का पत्थर साबित हुए हैं और व्यवपार एवं संस्कृति के विनियम के साथ साथ अन्तरधर्मीय उदारता और अम्न व शान्ति ने आतंकवाद व हिंसा और धार्मिक घ्रृणा को कम करने और ख़तम करने में महत्वपूर्ण रोल निभा रहे हैं।

मुस्लिम वर्ल्ड लीग के महा सचिव प्रसिद्ध इस्लामी स्कालर और अन्तरधर्मीय सद्भावना, उदारता और संवाद के झण्डावाहक सम्माननीय डा० मुहम्मद बिन अब्दुल करीम अल ईसा का वर्तमान दौरा भी इसी मुबारक सिलसिले की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। चूंकि सम्माननीय अतिथि डॉ० मुहम्मद बिन अब्दुल करीम अल ईसा अन्तरधर्मीय संवाद और विश्व शान्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं इसलिये वर्तमान राष्ट्रीय और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उनके इस दौरे से बड़ी आशाएं संबद्ध हैं। इन हवालों से मानव-सेवा और अम्न व शान्ति को बढ़ावा देने में सऊदी अरब के प्रयास की प्रशंसा भी हो रही है और विशेष रूप से डॉ० मुहम्मद बिन अब्दुल करीम अल ईसा और मुस्लिम वर्ल्ड लीग की सराहना हो रही है। भारत की राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन में उनका स्वागत करते हुए कहा कि भारत उदारता पर आधारित धर्मों और मूल्यों के बीच संवाद एवं वार्ता को विकसित करने में मुस्लिम वर्ल्ड लीग की भूमिका की प्रशंसा करता है। उन्होंने हिन्दुस्तान और सऊदी अरब के बीच खुशगवार संबन्धों का उल्लेख करते हुए और इसे बहुत महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि हिन्दुस्तान और सऊदी अरब दोनों ही हर तरह के आतंकवाद की निन्दा करते हैं और आतंकवाद के खिलाफ़ जीरो टॉलीरेन्स की पालीसी रखते हैं।

सम्माननीय राष्ट्रपति ने आतंकवाद और हिंसा के खिलाफ डॉ० मुहम्मद बिन अब्दुल करीम अल ईसा के मंतव्य का भी समर्थन किया और यह विश्वास व्यक्त किया कि डॉ० मुहम्मद अल ईसा के भारत दौरे से मुस्लिम वर्ल्ड लीग के साथ सहयोग के अवसर पैदा होंगे।

इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेन्टर नई दिल्ली के प्रोग्राम में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल ने सम्माननीय अतिथि डॉ० मुहम्मद बिन अब्दुल करीम अल ईसा की प्रशंसा करते हुए कहा कि

अन्तरधर्मीय सद्भावना के लिये इनके निरन्तर प्रयासों से उग्रवाद और बुनियाद परस्ती की रोक थाम में अहम मदद मिल रही है। यह वह दृष्टिकोण हैं जो हमारे नौजवानों को प्रभावित करते हैं उन्होंने कहा कि मुस्लिम वर्ल्ड लीग के बयान ने न केवल इस्लाम की गहराई और उसको बेहतर तरीक़े से समझने का रूझहान पैदा किया है बल्कि विभिन्न धर्मों के बीच हमदर्दी, उदारता और सम्मान के मूल्यों को विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है।

अफसोस की बात यह है कि डॉ मुहम्मद बिन अब्दुल करीम अल ईसा के इस महत्वपूर्ण दौरे के बारे में कुछ गलत भ्रांतियाँ फैलाई जा रही हैं लेकिन सम्माननीय मेहमान के स्पष्ट बयानों से यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि इस तरह का शोशा छोड़ना सहीह नहीं था। उन्होंने अपने स्पष्ट और ठोस बयान में इन तमाम मन गढ़त बातों को खातिर में न लाते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा कि उनका मक़सद इस्लाम के मानवीय भाई चारा के सन्देश को साधारण करना है।

उन्होंने विभिन्न संबोधनों और सभाओं में वही बात कही जो कि इस्लाम की शिक्षाओं का सार और इतिहासिक यथार्थ पर आधारित है। उन्होंने बिना लाग लपेट के हिन्दुस्तान में अनेकता में एकता और संवाद एवं सेकुलर संविधान की प्रशंसा की, इस्लाम को सकारात्मक उदारता और संवाद एवं वार्ता का धर्म क़रार देते हुए मुसलमानों से इस्लाम के सन्देश का प्रतिनिधि बनने पर जोर दिया और यहाँ विभिन्न धर्मों के पदधारियों से बार बार मुलाक़ात के बाद वार्ता, आपसी मेल मुहब्बत और मानवता के लिये उनके जजबे की सराहना की और व्यवहारिक रूप से बढ़ावा देने का उपदेश दिया।

इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेन्टर में आयोजित एक प्रोग्राम में बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों और धार्मिक गुरूओं से संबोधित करते हुए कहा कि जहाँ दुनिया के कई भागों में नकारात्मक रूझहानों में बढ़ोतरी हो रही है वहीं हिन्दुस्तान सह-अस्तित्व का एक आदर्श है। उन्होंने उदारता, और सह-अस्तित्व के ज्ञानात्मक प्रदर्शन पर बल देते हुए कहा कि यह केवल कांफ्रेन्स तक सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि इसको हमें अपने जीवन में भी उतारना चाहिए। उन्होंने अपने भाषण में भारतीय मुसलमानों की भरपूर प्रशंसा की और उन्हें राष्ट्रीयता की भावना से सुसज्जित करार दिया और कहा कि वह इस विभिन्नता का भाग हैं। उन्होंने अपनी तक़रीर में बार-बार अनेकता में एकता, विभिन्नता के सम्मान और इसको व्यवहारिक जीवन में उतारने पर जोर दिया। उन्होंने हिन्दुस्तान के लिये विभिन्नता को महान सम्पत्ति क़रार देते हुए कहा कि इससे लाभ उठाना चाहिये। उन्होंने कहा कि यहाँ से विश्व समुदाय को भी यह सन्देश जाएगा। उन्होंने इस्लाम को प्रेम, उदारता और संवाद एवं वार्ता का धर्म क़रार देते हुए कहा कि मुसलमान इन मूल्यों को अपनाएं।

मुस्लिम वर्ल्ड लीग के महा सचिव ने स्वामी विवेकानन्द इन्टरनेशनल फाउन्डेशन के ऑडीटोरियम में "गलोबल फाउन्डेशन फॉर सिविलाईजेशनल हारमोनी" के शीर्षक से आयोजित एक दूसरे प्रोग्राम में उपर्युक्त यथार्थ को दोहराने के साथ साथ कहा कि जब हमारे बीच संपर्क का अभाव होता है तो बहुत सी समस्याएं शुरू हो जाती हैं,

भ्रांतियां पैदा होती हैं, ऐसे में ज़रूरी है कि दुनिया में संवाद एवं वार्ता की शुरूआत हो, हर हालत में वार्ता और संवाद के लिये पुल बनाये जाएं। उन्होंने कहा कि हमारा धर्म मानवता है, हम सब एक ही वंशवृक्ष से हैं। हमारा मानना है कि हम एक ही पेड़ के विभिन्न भाग हैं। नौजवानों को गलत प्रशिक्षण से बचाना और गलत मालूमात से बचाना ज़रूरी है, अन्तरधर्मीय संवाद और वार्ता ही आगे बढ़ने का मार्ग है। उन्होंने कहा कि गलत व्यवहारों की वजह से एक दूसरे के बीच दूरियाँ बढ़ गईं हैं और यह हिंसा और आतंकवाद को जन्म देने का कारण है। सांस्कृतिक टकराव को रोकने के लिये हमें बचपन से ही अगली पीढ़ी की हिफाज़त और उसका मार्गदर्शन करना होगा। उन्होंने कहा कि आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले कारणों से बचना होगा जो गलत कल्पनाएं, घृणा पैदा करने वाले दृष्टिकोण, हिंसा और आतंकवाद की तरफ ले जाने का सबब बनें उनसे दूर रहना होगा। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि मेरी विभिन्न संगठनों, भारतीय संस्थाओं और मार्गदर्शकों से बेहतरीन मुलाक़ात रही, इसे व्यवहारिक रूप से पेश करने और सभ्यताओं के टकराव और घृणा से बचने की ज़रूरत है।

सम्माननीय डॉ मुहम्मद अल ईसा हफिज़हुल्लाह के इन बहुमूल्य बयानात और ख्यालात से उनके मिशन और प्रोग्राम की महानता और उपयोगिता का अन्दाज़ा होता है। उन्होंने जो बात कही साफ सुथरी और इस्लाम के सिद्धांतों और जमीनी यथार्थ पर आधारित कही जिसके प्रभाव यह देखने को मिले कि हर धर्म, मत, देश के शीर्ष बुद्धिजीवियों और धार्मिक व समुदायिक संगठनों के मार्ग दर्शकों और धर्मगुरूओं ने इनकी बातों को ग़ौर से सुना और उनकी प्रशंसा की। अल्लाह करे मुस्लिम वर्ल्ड लीग के महा सचिव का यह दौरा धार्मिक एकता, उदारता, सह-अस्तित्व, मानवीय मूल्यों की सुरक्षा, अम्न व शान्ति की स्थापना और घृणा, आतंकवाद और हिंसा के अन्त की भूमिका साबित हो।

हज सफलतापूर्वक संपन्न:

अल्लाह की कृपा से हज का मौसम सफलता पूर्वक संपन्न हो गया पिछले वर्ष की अपेक्षा इस साल हाजियों की अधिकता रही। दुनिया भर के १६० देशों से लगभग १८ लाख हाजियों ने इतमीनान, सुकून, भाईचारा और आध्यात्मिकता के वातावरण में हज के फ़रीज़े को अंजाम दिया। स्थानीय हाजियों की तादाद एक अन्दाज़े के अनुसार दस लाख से अधिक थी। सऊदी अरब ने हाजियों की प्रत्याशित अधिकता के मददे नज़र उनके स्वागत, रेसीडेन्स, परिवहन के लिये विस्तृत और चुस्त दुरूस्त प्रबन्ध किये थे। ट्रेफ़िक की बिना रूकावट आवाजाही और पवित्र स्थलों की तरफ जाने वाली सड़कों और राजमार्गों की हिफाज़त और स्तर को सुनिश्चित बनाने के लिये आधुनिक टेक्नॉलोजी और डरोन का प्रयोग किया गया। मिना में हाजियों के लिये सभी सुहूलतों से सुसज्जित दुनिया की सबसे बड़ी खेमा बस्ती बसाई गई। नमरा मस्जिद से हज के खुतबे को उर्दू सहित २० भाषाओं में प्रसारित किया गया जिसे दुनिया के लगभग ५० लाख लोगों ने सुना। हज के खुतबे में सुप्रियम ओलमा परिषद के सदस्य शैख डा० यूसुफ बिन मुहम्मद बिन सईद हफिजहुल्लाह ने आपसी एकता, इन्सानी भाईचारा और एकेश्वरवाद को अपनाने और

कुरआन व हदीस पर चलने पर जोर दिया। शरीअत को मतभेद से निकलने का पहला मार्ग बताया और कहा कि अल्लाह के नज़दीक पूरी सृष्टि एक जैसी है, सब आपस में भाई भाई हैं। इस साल के हज की एक बड़ी खूबी यह रही कि इतनी बड़ी तादाद के बावजूद किसी भी चरण में किसी असुगम घटना या कुप्रबन्धन की खबर नहीं आई और सब ने अच्छे प्रबन्ध के तहत आरामदेह हज करके दुनिया की पहली कल्याणकारी व इन्सानी हुकूमत और उसके शासक, अधिकारियों और अवाम के लिये दुआएं कीं और हंसी खुशी अपने वतन को वापस लौट गये इस प्रकार हज का यह मौसम सफलता पूर्वक भली भांति ऐतिहासिक सफलताओं के साथ संपन्न हुआ।

मुझे अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से इस साल हज करने का सौभाग्य मिला। हरमैन शरीफैन के सेवक मलिक सलमान बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद हफिज़हुल्लाह ने दुनिया भर के लगभग पांच हज़ार हाजियों को अपनी मेहमानी और खर्च पर हज कराया। भारत से भी इन खुसूसी मेहमानों की बड़ी तादाद ने हज का सौभाग्य प्राप्त किया। फलस्तीन के शहीदों के खानदानों, ओलमा, जमीअत व जमाअत के प्रमुख, यूनीवर्सिटियों और ज्ञानात्मक केन्द्रों के प्रमुख और विभिन्न मुल्कों के शासकों, और लीडरों ने भी हरमैन शरीफ़ैन के खादिम के मेहमान बनने पर हार्दिक खुशी का इज़हार किया, इनसे मुलाक़ात, बातचीत और लगभग दो हफते तक निरन्तर और विभिन्न मुलाकातों और हज के मनासिक की अदायगी के दौरान साथ में उठना बैठना, बात चीत और भोजन के दौरान एक ही बात सबसे ज़्यादा चर्चा का विषय रही कि हज और हाजियों के लिये जो जतन मेहनत, तैयारी, फिदाकारी सऊदी अरब के बादशाह सलमान बिन अब्दुल अज़ीज़ और युवराज मुहम्मद बिन सलमान कर रहे हैं और इसके लिये उन्होंने अपनी पूरी ममलुकत और माल व कार्यकर्ता समर्पित कर दिये हैं वह बेमिसाल हैं और जब बार बार की मुलाकातों में यहां तक कि विशेष दस्तरखवानों पर जो हरमैन शरीफैन के खादिम के चन्द मेहमानों के सम्मान में सजाया गया था महामहिम डा० अब्दुल लतीफ बिन अब्दुल अज़ीज़ आले शैख मंत्री इस्लामी मामलात, ने हज प्रबन्धन और आयोजनों का उल्लेख करते हुए कहा कि हुकूमत हज के ख़तम होते ही अगले हज के लिये तमाम संसाधनों को प्रयोग करते हुये और भूतपूर्व के अनुभव, निरीक्षण की समीक्षा करते हुए अगले साल के हज की तैयारी शुरू कर देती है।

इन विशेष मेहमानों के अलावा हरमैन में सभी हाजियों के लिये जो सुहूलतें, जो तैयारियां, विस्तार, मार्गदर्श, खाने पीने की अधिकता, रहने की सुविधा, सफाई सुथराई और हर स्तर पर जो प्रबन्ध थे इसको बयान करने से क़ासिर हैं इस पर अल्लाह का जितना शुक्र अदा किया जाए कम है। इसके लिये सऊदी सरकार, तमाम ओलमा और अवाम शुक्रिये के पात्र हैं और हम दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला इन को दुनिया व आख़िरत में इसका बेहतरीन बदला दे। यह जजबात और उदगार व दुआ सभी की जुबान पर जारी थे। अल्लाह तआला हमारे हज को मबरूर और मकबूल बनाये और हरमैन के सम्माननीय सेवकों, प्रतिष्ठित मंत्रियों और ओलमा व अवाम और हाजियों को हज की कामयाबी पर हार्दिक बधाई पेश करते हैं।

इस्लाम धर्म में लड़कियों के अधिकार

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी,पटना

जमा-न-ए जाहिलियत (अज्ञानता काल अर्थात इस्लाम से पहले अरब का काल) कुरैश क़बीले के अलावा दूसरे अरब के क़बाइल लड़कियों की पैदाइश को अपनी शर्मिंदगी का कारण समझते थे और पैदा होते ही इन लड़कियों को क़त्ल कर देते थे, यह निर्दयी और जालिम थे, फूल जैसी बच्चियों को अपने ही हाथों दफ़न कर दिया करते थे। इस पर अल्लाह तआला ने अपने क्रोध ा को इस तरह व्यक्त और प्रकट किया है ''और जब जिन्दा दरगौर (दफन) की गई लड़की से पूछा जाएगा कि वह किस पाप के सबब क़त्ल की गई है।'' (सूरे तकवीर ८-९)

पवित्र कुरआन की दूसरी आयतों में बदतरीन अपराध क़रार दिया गया हैः ''और तुम लोग अपनी औलाद को मोहताजी के डर से क़त्ल न करो, उन्हें और तुम्हें हम रोज़ी देते हैं, बेशक उन्हें क़त्ल करना महा पाप है।'' (सूरे इसरा-३१)

दुख की बात तो यह है कि जमा-न-ए जाहिलियत की यह बीमारी आज हमारे समाज को भी लग चुकी है और इसे खोखाली व कैंसर ग्रस्त कर रही है। आज हमारे समाज में भी खूबसूरत और सभ्य तरीक़े से यह जाहिलाना रस्म जारी है।

ऐसे लोग अपने आप को उदार, विकसित और नई रोशनी के दिलदादा समझते हैं वह कोख में पलने वाली बच्चियों के चेहरे उनकी माओं को नहीं देखने देते, जो बच्चियों को अपनी कोख में छिपाए एवं सुरक्षित रखते हुए विभिन्न प्रकार की दयनीय परिस्थितियों से गुज़रती है इन बच्चियों को यह मौक़ा भी नहीं देते कि वह इस संसार को एक बार आंखें खोल कर देख ले बल्कि दुनिया में आने से पहले उन्हे जीवन से वंचित कर देते हैं।

अफसोसनाक पहलू यह है और इसे इस उम्मत के विचार की कोताही और अनाथपन कह लें कि आज लड़के और लड़कियों के बीच अन्तर की दीवारें उठाई जा रही हैं जो बिल्कुल गैर शरई, असमाजिक और अप्राकृतिक है। अल्लाह के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह से डरो, अपनी औलाद के बीच इन्साफ करो'' (सहीह मुस्लिम १६२३) हदीसों में बेटियों के प्रशिक्षण एवं पैदाइश पर असंख्य फज़ीलतें बताई गई हैं, बेटियों की पैदाइश पर उदासीन होना अन्य लोगों की कार्य शैली है लेकिन आज कितने लोगों को बेटियों की पैदाइश अच्छी नहीं लगती, उनकी पैदाइश पर रंज व दुख में लिप्त हो जाते हैं। उनके चेहरे काले हो जाते हैं, बेटी देने के अल्लाह के फैसले से सहमत नहीं होते। पवित्र कुरआन में भी अल्लाह तआला ने फरमाया हैः

''और उन में से किसी को जब लड़की की शुभसूचना दी जाती है तो उसका चेहरा काला हो जाता है जबकि वह ग़म से निढ़ाल होता है जो बुरी ख़बर उसे दी गई है

उसकी वजह से लोगों से मुंह छिपाये फिरता है (सोचता है) क्या अपमान व रूस्वाई के बावजूद उसे अपने पास रखे या मिटटी में ठोंस दे'' (सूरे नह्ल ५८-५९)

आज अगर लगातार दो-तीन लड़कियाँ पैदा हो जाती हैं तो ऐसी औरत को मनहूस समझा जाता है उसे परिवार की कुछ औरतों के ताने सुनने पड़ते हैं कभी कभार ऐसा भी होता है कि पति ऐसी औरत को छोड़ देता है जबकि हक़ीक़त यह है कि बेटी को जनम देने में बीवी निर्दोष है बल्कि पति-पत्नी दोनों निर्दोष हैं यह तो अल्लाह का फैसला है, यह उसी के अधिकार में है, इस मामले में दूसरे का कोई अम्ल दख़ल नहीं।

कितने जालिम बादशाह, कमाण्डर, नबी, औलिया, माहिर हकीम औलाद से वंचित रहे, कितने लड़के के लिये तरस्ते रहे और बहुतेरे लड़की की इच्छा और आशा दिल में लिये हुये इस दुनिया से चले गये।

अल्लाह हर चीज़ का स्वामी है, वह सर्वशक्तिमान है, वह जो चाहता है करता है। पवित्र कुरआन कहता है:

''आस्मानों और ज़मीन की बादशाही सिर्फ अल्लाह के लिये है, वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसे चाहता है लड़के देता है या उन्हें लड़के और लड़कियां मिला कर देता है और जिसे चाहता है बाँझ बना देता है, वह निसन्देह बड़ा जानने वाला, बड़ी कुदरत वाला है'' (सूरे शूरा-४९-५०)

इन बेटियों के बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

''जिस शख्स को बेटियों की वजह से आज़माया गया फिर उसने उनके साथ अच्छा व्यवहार भी किया हो उसके लिये बेटियाँ जहन्नम से ढाल बन जाएंगी। किसी कवि ने तो यह कह दिया।

नाखल्फ बेटे दर्दे सर बने
बेटियों ने सर दबाया देर तक

कभी बेटी माँ बाप की ऐसी सेवा करती है जो बेटे नहीं कर पाते जैसा कि इस हदीस में है:

''सहाबिया ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सवाल किया कि उनकी माँ पर एक महीने का रोज़ा वाजिब था मगर वह रोज़ा को रखने से पहले मर गईं तो क्या वह अपनी माँ की तरफ से इन रोज़ों की कज़ा कर सकती है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: तुम उसकी तरफ से रोज़े रखो। इन का दूसरा सवाल था कि उनकी माँ ने हज नहीं किया था तो क्या वह अपनी माँ की तरफ से हज कर सकती है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम उसकी तरफ से हज कर लो''

गौर कीजिए वह सहाबिया कैसी थीं, अपनी माँ का ख्याल रखने वाली और उनकी बीमारी में देख भाल करने वाली, यह नेक बेटी अपनी माँ की तरफ से रोज़ा की कज़ा करने और हज करने के लिये मसला पूछ रही हैं जबकि दोनों कठिन इबादत हैं मगर बेटी को अपनी माँ की जन्नत और उसके दरजात की चिंता है काश हर औलाद ऐसी होती। आज हर माँ बाप की, मुसलमानों की बड़ी जिम्मेदारी है कि वह अपनी बच्चियों, लड़कियों की आबरू की हिफाज़त करें। समाज की कोई भी बच्ची बिगड़ी है तो इससे समाज में बदनामी होती है। याद रखें इस्लाम अपनी और घर की हिफ़ाज़त के साथ अपने समाज की हिफाज़त पर जोर देता है। फिर हमारे समाज को क्या हो गया है

कि हमारे शिक्षित नौजवान लड़के हों या लड़कियां दीन व ईमान से दूर हो रहे हैं और मुस्लिम समाज में दीन से फिर जाने का एक तूफ़ान बरपा है। पवित्र कुरआन का यह स्पष्ट आदेश है कि किसी मुश्रिक मर्द व औरत से उस वक़्त शादी जायज़ नहीं है जब तक कि वह ईमान कुबूल न कर ले। हमारा इस्लाम किसी गैर मुस्लिम से शादी की इजाज़त नहीं देता। कुरआन कहता है ''और मुशिरक औरतों से जब तक ईमान न लायें शादी न करो'' (सूरे बक़रा-२२१)

कुरआन में दूसरी जगह कहा गया है ''और मुश्रिक मर्दों से अपनी औरतों की शादी न करो'' (सूरे बक़रा-२२१)

क्या वह वक़्त नहीं आया, वह घड़ी नहीं आई कि हम परिवारिक व्यवस्था के सुधार पर ध्यान दें। अपनी औलाद को-इजूकेशन (मख़लूत तालीम) से बचायें, अपने बच्चों पर कड़ी निगरानी रखें, बच्चियों को परदे का पाबन्द बनायें।

क्या वह वक़्त नहीं आया कि मालदार हज़रात और समुदायिक एवं कल्याणकारी संगठनों के लोग आगे बढ़ें और इन बच्चियों का भरण पोषण और आर्थिक सहयोग करें जो घरेलू परेशानी, माँ-बाप की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के सबब कारखानों और कमपनियों में काम कर रही हैं और वासनाग्रस्त नौजवानों की हवस का शिकार हो रही हैं जिस का आखिरी अंजाम दीन से विमुखता है। इस्लाम धर्म सिर्फ व्यभिचार से ही नहीं बल्कि व्यभिचार के कारणों से भी मना करता है। इस्लाम धर्म जुबान, और गुप्तांग की हिफाज़त करने वालों को जन्नत की खुशखबरी सुनाता है। इस्लाम धर्म उच्च नैतिक मूल्यों को विकसित करने और आदर्श समाज के गठन पर उभारता है। इसी इस्लाम धर्म और उसकी उज्जवल शिक्षाओं के आधार पर तारीख की आखों ने ऐसा पवित्र समाज देखा जो मानवीय इतिहास का सबसे सौन्दर्य समाज या जिस में मानवता ने एक लम्बी मुददत के बाद सुख और चैन का सांस लिया अफसोस कि हमने अपने पूर्णजों के इस आदर्श को गंवा दिया।

मुवररिख यूं जगह देता नहीं तारीखे आलम में

बड़ी कुर्बानियों के बाद पैदा नाम होता है

(प्रेस रिलीज़)

मुहर्रमुल हराम १४४५ का चाँद नज़र नहीं आया

दिल्ली, १८ जुलाई २०२३

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २९ जिलहिज्जा १४४४ हिजरी अर्थात १८ जुलाई २०२३ मंगलवार को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और मुहर्रमुल हराम के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदधारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिसमें विभिन्न राज्यों से चांद को देखने की प्रमाणित खबर नहीं मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि दिनाँक १९ जुलाई २०२३ बुधवार के दिन मुहर्रमुल हराम की ३०वीं तारीख होगी और वीरवार को मुहर्रमुल हराम की पहली तारीख होगी।

पवित्र कुरआन की फज़ीलत (4)

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

२३. क़्यामत के दिन पवित्र कुरआन पढ़ने वाले के माँ बाप का प्रोत्साहनः

बुरैदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाः ''क़्यामत के दिन जब इन्सान कब्र से निकलेगा तो कुरआन अपने पढ़ने वाले से कमजोर इन्सान की शक्ल में मिलेगा और उससे पूछेगाः क्या तुम मुझे पहचानते हो? वह कहेगाः मैं तुम्हें नहीं पहचानता। कुरआन कहेगाः मैं वही कुरआन हूं जिसने तुम्हें सख़्त गर्मी के दिनों में प्यासा रखा और रातों को जगाये रखा। हर व्यवपारी अपने व्यवपार का बदला पा चुका है और आज तुम्हारा व्यवपार सबसे ज़्यादा लाभाकारी होगा। फिर उसके दायें हाथ में बादशाहत दे दी जाएगी और बायें हाथ में हमेशगी दे दी जाएगी और उसके सर पर प्रतिष्ठा का ताज रखा जायेगा, उसके मां बाप को दो जोड़े पहनाए जाएंगे जिनके मुक़ाबले दुनिया की कोई क़ीमत न होगी। वह दोनों अर्ज़ करेंगे हमें यह क्यों पहनाया गया है? उनसे कहा जाएगा तुम्हारे बेटे के पवित्र कुरआन का ज्ञान हासिल करने की वजह से, इसके बाद इससे कहा जाएगाः पढ़ते जाओ और जन्नत की सीढ़ियों और बालाख़ानों को तय करते जाओ, जब तक वह पढ़ता रहेगा, आगे बढ़ता रहेगा। उसे अधिकार होगा वह चाहेगा तो रवानी के साथ पढ़ेगा और चाहेगा तो ठेहर ठेहर कर पढ़ेगा'' (मुस्नद अहमद ३९४, इब्ने माजाः ३७८१, इमाम बुसैरी ने जवाइद सुनन इब्ने माजा में और शैख अलबानी ने सिलसिलातुल अहादीदिस सहीहा २८२९ में इस हदीस को हसन क़रार दिया है)

२४. सूरे इख़्लास से मुहब्बत अल्लाह तआला से मुहब्बत की दलील है।

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक सज्जन को एक मुहिम पर रवाना किया वह सज्जन अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाते थे और नमाज़ खतम ''कुल हुवल्लाहू अहद'' पर करते थे। जब लोग वापस आये तो इसका उल्लेख नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इनसे पूछो कि वह यह अमल क्यों अपनाये हुए थे फिर लोगों ने पूछा तो उन्होंने कहा कि वह ऐसा इसलिये करते थे कि यह अल्लाह तआला की सिफ़त है और मैं इसे पढ़ना ज़्यादा पसन्द करता हूं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह भी उन्हें पसन्द करता है। (सहीह बुख़ारी ७३७५)

सूरे इख्लास का अनुवाद

''आप कह दीजिए कि वह अल्लाह तआला एक ही है अल्लाह तआला बेनियाज़ है। न उससे कोई पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ और न कोई उसका हमसर (समकक्ष) है।''

२५. पवित्र कुरआन की तिलावत से सकीनत नाज़िल होती हैः

बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि

एक आदमी सूरे कह्फ की तिलावत कर रहा था, उसके क़रीब ही दो बड़ी रस्सियों में एक घोड़ा बंधा हुआ था इतने में उसे एक बदली ने ढांप लिया और वह उससे करीब होने लगी। यह देख कर उसका घोड़ा कूदने लगा। सुबह हुई तो सहाबी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और इस घटना के बारे में बयान किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''यह सकीनत (सुख व इतमीनान) था जो कुरआन की वजह से नाज़िल हो रहा था। (बुख़ारी ४७२६, सहीह मुस्लिम ७६५)

२६. सूरे इख्लास, सूरे फलक़ और सूरे नास को सुबह शाम तीन तीन बार पढ़ने की फज़ीलत

अब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि हम बारिश वाली एक घोर अंधेरी रात में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तलाश करने निकले ताकि आप हमें नमाज़ पढ़ा दें, जब मैंने आप को पा लिया तो आप ने फरमायाः ''कहो'' तो मैं ने कुछ नहीं कहा ''कहो'' आप ने फिर फरमायाः मगर मैंने कुछ न कहा। (क्योंकि मालूम नहीं था क्या कहूं?) आप ने फिर फरमाया ''कहो'' मैंने कहा क्या कहूँ? आप ने फ़रमाया कुल हुवल्लाहू अहद और अल मुऔवजतैन (कुल अऊजू बि रब्बिल फ़लक़, कुल अऊजूबिरब्बिन्नास) सुबह शाम तीन बार पढ़ लिया करो, यह सूरतें तुम्हें हर बुराई से बचाएंगी और सुरक्षित रखेंगी'' (सुनन अबू दाऊद ५०८२, सुनन तिर्मिज़ी ३५७५ शैख़ अलबानी ने सहीह अबू दाऊद में इस हदीस को सहीह क़रार दिया है)

सूरे फ़लक़ का अनुवादः

''आप कह दीजिए! कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूं। हर उस चीज़ के शर (बुराई) से जो उसने पैदा की है। और अंधेरी रात के अंधेरे के शर से जब उसका अंधेरा फैल जाए। और गिरह लगा कर उन में फूंकने वालियों के शर से (भी) और हसद करने वाले की बुराई से भी जब वह हसद करे।''

सूरे नास का अनुवाद

''आप कह दीजिए! कि मैं लोगों के परवरदिगार की पनाह में आता हूं। लोगों के मालिक की, लोगों के माबूद की पनाह में। वसवसा डालने वाले पीछे हट जाने वाले के शर से। जो लोगों के सीने में वस्वसा डालता है चाहे वह जिन में से हो या इन्सान में से''

२७. पवित्र कुरआन पर अमल सीधी राह और इसको छोड़ना गुमराही है

ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खुम नामक चश्मा (जल स्रोत) के क़रीब हमारे बीच खुतबा देने के लिये खड़े हुए यह मक्का और मदीने के बीच एक जगह का नाम है। आप ने अल्लाह की प्रशंसा की और हमको नसीहत व प्रवचन किया। इसके बाद फरमायाः '' ऐ लोगो! मैं इन्सान हूं। हो सकता है कि मेरे पास मेरे रब का दूत आए और मैं उसकी दावत को कुबूल कर लूं। मैं तुम लोगों के बीच दो बड़ी चीज़ें छोड़े जा रहा हूं, एक अल्लाह की किताब है जो सीधी राह और मार्गदर्शक है जो इस को मज़बूती से पकड़े रहेगा और इसके अहकाम, आदेशों एवं शिक्षाओं की पैरवी करता रहेगा तो वह सीधी राह पर अग्रसर रहेगा लेकिन जो इससे विमुख होगा वह गुमराह हो जाए गा इसलिये तुम अल्लाह की किताब को मज़बूती से थामे रहो और दूसरे मेरे घर वाले हैं। मैं अपने घर वालों के संबन्ध में तुम्हें अल्लाह का वास्ता देता हूं। मेरे अपने घर वालों के संबन्ध में तुम्हें

अल्लाह का वास्ता देता हूं। (सहीह मुस्लिम-२४०८)

२८. सूरे मुल्क की ज़्यादा से ज़्यादा तिलावत, तिलावत करने वाले की सिफारिश का कारण बनेगा

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः पवित्र कुरआन की तीस आयतों पर आधारित एक सूरे ने एक आदमी की सिफारिश की तो उसे बख्श दिया गया, यह सूरे ''तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्को'' है। (सुनन तिर्मिज़ी २८६१, सुनन अबू दाऊद १४००, सुनन इब्ने माजा ३७८६, शैख नासिरूददीन अल्बानी ने इस हदीस को सहीह अबू दाऊद में सहीह क़रार दिया है।)

२९. पवित्र कुरआन पर अमल आस्मान में प्रशंसा और जमीन में नेक नामी का सबब बनता है

अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मैं तुम्हें अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूं क्योंकि वह हर चीज़ की बुनियाद है और तुम जिहाद (मन में उत्पन्न होने वाली बुराइयों पर काबू पाना, सत्य का साथ देना, असहाय, और मजलूमों की मदद करने) को लाज़िम पकड़े रहो क्योंकि यह इस्लाम की रहबानियत है और अल्लाह का ज़िक्र और पवित्र कुरआन की तिलावत करते रहो क्यों कि यह आस्मान में तुम्हारी बेहतरी का माध्यम और ज़मीन में तुम्हारी नेकनामी का सबब होगा। इस हदीस को इमाम अहमद (हदीस न० ११७६१) ने रिवायत किया है और शैख अल्बानी ने सिलसिलातुल अहादीदिस्सहीहा ८७/१ में कहा है कि दो सनदों से आने और दोनों के संग्रह से यह हदीस मेरे नज़दीक हसन है।

३०. पवित्र कुरआन को याद करके भूलने वाले के लिये चेतावनी

अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख्स निहायत ही बुरा है जो कहता है कि मैं फलां और फलां आयत भूल गया बल्कि इन्सान को यह कहना चाहिए कि भुला दिया गया। तुम लोग कुरआन को पढ़ा करो क्योंकि वह लोगों के सीनों से उन चौपायों से भी ज़्यादा तेज़ी से निकलता है जो अपनी रस्सियों में बंधे हुए हों। (सहीह मुस्लिम ७९०)

३१. तहज्जुद में तिलावत करना महा पुण्य का काम

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख्स दस आयतों की तिलावत के साथ क्यामुल्लैल करेगा उसका नाम गाफ़िलों की सूची में नहीं लिखा जाए गा जो सौ आयतों की तिलावत के साथ क्यामुल्लैल करेगा उसका नाम आबिदों में लिखा जायेगा और जो शख्स एक हज़ार आयतों की तिलावत के साथ क़्यामुल्लैल करेगा वह बेइन्तेहा (असंख्य) पुण्य जमा करने वालों की सूची में लिखा जायेगा'' (सुनन अबू दावूद १३९८, शैख अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद में सहीह करार दिया है।)

३२. पवित्र कुरआन की तिलावत सुन कर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आंखें आसुओं से भर गयीं

अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ

से कहाः ''मुझे कुरआन सुनाओ'' मैंने कहाः मैं आप को कुरआन सुनाऊँ जबकि कुरआन आप ही पर नाज़िल हुआ है। आप ने फरमायाः हां, फिर मैं ने सूरे निसा आयत ४१ की तिलावत की जब मैं इस आयत (अनुवाद) (''पस क्या हाल होगा जिस वक़्त कि हर उम्मत में से एक गवाह हम लायंगे और आप को उन लोगों पर गवाह बना कर लायेंगे) आप ने फरमायाः ''बस करो, मैं मुड़ा तो देखा कि आप की दोनों आखें आसुओं से भर गई थीं''। (सहीह बुख़ारी-४७६३)

३३. तीन दिनों से कम वक़्त में पवित्र कुरआन की बिना समझे तिलावत करना कैसा है?

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स पवित्र कुरआन को तीन दिन से कम (वक़्त में) पढ़ता है वह उसे समझता नहीं है।'' (सुनन अबू दाऊद १३९४, इमाम अल्बानी ने इस हदीस को सहीह अबू दाऊद में सहीह कहा है)

३३. नमाज़ में तीन आयतों की तिलावत का सवाब

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! ने फरमायाः ''क्या तुम में से कोई इस बात को पसन्द करता है कि जब वह घर लौटे तो वह बड़ी बड़ी तीन गाभिन ऊंटनियां पाये जो मोटी भी हों? हम ने कहाः हां ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप ने फरमायाः ''इन्सान का अपनी नमाज़ में तीन आयतों की तिलावत करना तीन बड़ी और मोटी ऊंटनियों से बेहतर है।'' (सहीह मुस्लिम ८०२)

३५. पवित्र कुरआन का ज्ञान अल्लाह की खुशी हासिल करने के लिये हो

अब्दुर्रहमान बिन शिब्ल अंसारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''पवित्र कुरआन का ज्ञान हासिल करो और इस पर अमल करो, न इस में कोताही किया करो और न इस सिलसिले में अतिश्योक्ति से काम लिया करो न इसे खाने का जरीआ बनाओ और न ज़्यादा माल कमाने का वसीला'' (मुस्नद अहमद १५५६८, इस हदीस को शैख अलबानी ने सहीहुल जामिइस सगीर १६६८, और सिलसिलातुल अहादीसिस सहीहा २६० में सहीह क़रार दिया है)

३६. पवित्र कुरआन को दुनिया की उपलब्धि का माध्यम बनाना संगीन पाप है

इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का गुज़र एक कथावाचक से हुआ जो पवित्र कुरआन की तिलावत करके लोगों से मांगता था। आप ने इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा और फ़रमायाः मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना है कि जिसने पवित्र कुरआन का ज्ञान प्राप्त किया है उसे अल्लाह तआला से ज्ञान मांगना चाहिए। कुछ ऐसे लोग पैदा होंगे जो पवित्र कुरआन की तिलावत करेंगे और लोगों के सामने हाथ फैलायेंगे'' (तिर्मिज़ी २९१७, मुस्नद अहमद १९८८५) शैख अल्बानी ने इस हदीस को सहीहुल जामे ६४६७ में हसन क़रार दिया है।

३७. पवित्र कुरआन को अच्छी आवाज़ में न पढ़ने पर दण्ड की चेतावनी

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह

के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः '' वह शख्स हम में से नहीं है (अर्थात हमारे तरीक़े पर नहीं है) जो पवित्र कुरआन को अच्छी आवाज़ में नहीं पढ़ता है'' (सहीह बुखारी ७०८६)

३८. अच्छी आवाज़ के साथ तिलावत की फ़ज़ीलत

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाः ''अल्लाह तआला इस तरह से किसी चीज़ को नहीं सुनता है जिस तरह से खुश आवाज़ नबी की आवाज़ को सुनता है जो अपनी उत्तम आवाज़ में पवित्र कुरआन का ऊंची आवाज़ से पढ़ता है''। (सहीह मुस्लिम-७९२)

३९. दिखावे के लिये पवित्र कुरआन को सीखना और सिखाना

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क़्यामत के दिन सबसे पहले ऐसे शख्स का फैसला किया जाएगा जिसने शहादत पाई होगी। जब उसे लाया जाएगा तो उससे नेमतों की पहचान कराई जाएगी वह इन नेमतों को स्वीकार कर लेगा। अल्लाह तआला इससे पूछेगा तूने इसके लिये कया किया? वह कहेगा मैंने तेरी राह में क़िताल किया (सत्य का साथ दिया और असहाय और मजलूमों की मदद की) यहां तक कि शहीद हो गया। अल्लाह तआला कहेगा तू झूठ बोल रहा है तूने तो इसलिये क़िताल किया कि तुझे बहादुर कहा जाए और तुझे बहादुर कहा भी गया फिर हुक्म होगा तो उसे चेहरे के बल घसीट कर नरक में डाल दिया जागए। दूसरा वह शख्स हो गा जिसने दीन का ज्ञान हासिल किया होगा और दूसरों को इसे सिखाया होगा और इस ने कुरआन को पढ़ा होगा। वह लाया जाएगा तो उसे नेमतों को याद दिलाया जाएगा वह शख्स भी नेमतों को पहचान लेगा। अल्लाह तआला उससे पूछेगाः तूने इसके लिये क्या किया? वह कहेगा मैंने ज्ञान प्राप्त करके दूसरों को सिखाया और तेरे लिये पवित्र कुरआन को पढ़ा। अल्लाह तआला कहेगा तू झूठ बोलता है तुम ने ज्ञान इस लिये हासिल किया था ताकि तुझे ज्ञानी कहा जाये और कुरआन इसलिये पढ़ा था कि तुझे कारी कहा जाए और दुनिया में तुझे (आलिम व क़ारी) कहा भी गया फिर हुक्म होने पर इसे चेहरे के बल घसीट कर नरक में डाल दिया जाएगा और तीसरा ऐसा शख्स हो गा जिसे अल्लाह ने हर तरह के माल व दौलत से नवाज़ा होगा इसको भी लाया जायेगा इसको नेमतों के बारे में याद दिलाया जायेगा जब वह नेमतों को स्वीकार कर लेगा तो अल्लाह तआला इससे पूछेगा तूने इसके लिये क्या किया? वह कहेगा मैंने कोई ऐसी राह नहीं छोड़ी जिस में तूने खर्च करने को पसन्द करता है। अल्लाह तआला फरमायेगा तू झूठा है तू तो केवल इस लिये खर्च किया कि तुझे दानवीर कहा जाये तुझे दुनिया में दानवीर भी कहा गया फिर हुक्म होगा तो उसको उसके चेहरे के बल घसीट कर नरक में डाल दिया जायेगा।'' (सहीह मुस्लिम १९०५)

४०. पवित्र कुरआन के साथ शुभचिंतन दीन है

अबू रूक़ैया तमीम बिन औस दारी बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दीन सरासर नसीहत (भलाई) है। हमने अर्ज़ किया किसके लिये? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''अल्लाह के लिये, उसकी किताब के लिये, उसके

रसूल के लिये, मुस्लिमों के इमामों के लिये और आम लोगों के लिये।'' (सहीह मुस्लिम ५५)

पवित्र क़ुरआन से शुभचिंतन कम से कम यह है कि इस पर ईमान लाया जाये, इसकी तिलावत की जाये, इसके अर्थ को समझा जाये, गौर करे, अमल करे और इसके पठन-पाठन और प्रसार का काम किया जाए।

यह चालीस हदीसें पवित्र क़ुरआन की फ़ज़ीलत और इसकी तिलावत करने वालों और इसको पढ़ने और पढ़ाने वालों के सिलसिले में हैं। अल्लाह तआला के लिये हम दुनिया व आख़िरत में सफलता, सम्मान और वर्चस्व के लिये हम पर यह अनिवार्य हो जाता है और हम में से हर मुसलमान को चाहिए कि हम इन हदीसों को व्यवहारिक रूप से अपनाएं, इनको पढ़ें, इन हदीसों की रोशनी में इस शाश्वत किताब पर अमल करें और इस बाबरकत और अद्वतीय किताब की ज़्यादा से ज़्यादा तिलावत करके और इससे अपना रिश्ता मज़बूत करके अपने आप को नेकियों से मालामाल कर लें, अपने माल व औलाद में खैर व बरकत लायें और अपने घरों को आबाद करें, इसकी तिलावत व जिक्र से स्वयं को सुसज्जित करें अल्लाह तआला हमें इसकी क्षमता दे। इन हदीसों के अनुवादक, संकलनकर्ता, प्रकाशक और सहायक को अपनी दुआओं में याद रखें और दुनिया व आखिरत की सफलता एवं सौभाग्य हासिल करें, अपने पूर्वजों के आदर्श को अपनाएं। आमीन

(चौथी व अंतिम क़िस्त)

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

अल्लाह का ज़िक्र करने का फायदा

अबू हमदान अशरफ फैज़ी

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''इस लिये तुम मेरा ज़िक्र किया करो, मैं भी तुम्हें याद करूंगा मेरी शुक्रगुज़ारी करो और मेरी नाशुकरी से बचो'' (सूरे बक़राः १५२)

एक हदीस में हैः अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूं और मैं उसके साथ हूं जब वह मेरा ज़िक्र (जाप) करता है और जब वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूं और जब वह मुझे सभा में याद करता है तो मैं उसे उससे बेहतर फरिश्तों की सभा में याद करता हूं और अगर वह मुझ से एक बालिश्त क़रीब आता है तो मैं उससे एक हाथ क़रीब हो जाता हूं और अगर वह मुझ से एक हाथ क़रीब आता है तो मैं उससे दो हाथ क़रीब हो जाता हूं और अगर वह मेरी तरफ चल कर आता है तो मैं उसके पास दौड़ कर आ जाता हूं। सहीह बुखारी-७४०५)

अल्लाह को याद करने से आत्मा को खाद्यान और दिल को संतुष्टि मिलती है जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया हैः ''जो लोग ईमान लाये उनके दिल अल्लाह के जिक्र से इतमीनान हासिल करते हैं याद रखो अल्लाह के जिक्र से ही दिलों को तसल्ली हासिल होती है'' (सूरे रअ्दः २८)

अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः उस शख्स की मिसाल जो अपने रब को याद करता है और उस शख्स की मिसाल जो अपने रब को याद नहीं करता जिन्दा और मुर्दा जैसी है।

न दुनिया से न दौलत से न घर आबाद करने से

तसल्ली दिल को मिलती है खुदा को याद करने से

अफसोस कि आज अधिकतर घर सीनमा घर बन गये हैं, घरों में म्यूज़िक और गाने सुने जाते हैं, फिलमें और डरामे देखे जाते हैं, अल्लाह के ज़िक्र और पवित्र कुरआन की तिलावत का बहुत कम एहतमाम होता है। एक वक़्त था कि जब मुस्लिम महल्लों और गलियों से गुज़रते थे तो घरों से पवित्र कुरआन की तिलावत की आवाज़ सुनाई देती थी, मगर आज गाने और बजाने की आवाज़ सुनाई देती है, ऐसे में अल्लाह की मदद कहां से आएगी?

लगातार ज़िक्र करने वाले पर शैतान हावी नहीं हो सकता इस लिये कि शैतान पर अल्लाह के जिक्र से बहुत बड़ी मार पड़ती है, वह अपमानित होता है। लेकिन जो लोग अल्लाह के जिक्र से गफलत

करते हैं, शैतान बड़ी आसानी से हावी होता है और उनका साथी बन कर उन्हें बुराई पर आमादा करता है।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः '' और जो शख्स रहमान की याद से गफलत करे हम उस पर एक शैतान तैनात कर देते हैं वही उसका साथी रहता है। (सूरे जुख़्रूफ़ः३६)

दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फरमायाः ''उन पर शैतान ने ग़लबा हासिल कर लिया और उन्हें अल्लाह का ज़िक्र भुला दिया है यह शैतान का लश्कर है, कोई शक नहीं कि शैतान का लश्कर ही ख़सारे वाला है'' (सूरे मुजादलाः१६)

इस लिये मर्द और औरतें शैतान के हथकंडों से बचने के लिये ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह का जिक्र (जाप) करें। हदीस में हैः

''जब नमाज़ के लिये अज़ान दी जाती है तो शैतान पीठ मोड़ कर हवा निकालता हुआ भागता है ताकि अज़ान न सुन सके। जब अज़ान देने वाला चुप हो जाता है तो फिर आ जाता है और जब जमाअत ख़ड़ी होने लगती है तो फिर भाग जाता है लेकिन जब अज़ान देने वाला चुप हो जाता है तो फिर आ जाता है और आदमी के दिल में वसवसे (भ्रम) पैदा करता रहता है। कहता है फलाँ फलाँ बात याद करो। वह बातें याद दिलाता है जो उस नमाज़ी के ज़ेहन में न थीं इस तरह नमाज़ी को भी याद नहीं रहता कि उसने कितनी रकातें पढ़ीं।'' (सहीह बुखारी-१२२२)

दूसरी हदीस में है

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः शैतान इन्सान के सर के पीछे रात में सोते वक़्त तीन गांठ लगा देता है और हर गांठ पर फूंक मारता है कि सो जा अभी रात बहुत बाक़ी है, फिर अगर कोई जाग कर अल्लाह का ज़िक्र करता है तो एक गांठ खुल जाती है फिर जब वुज़ू करता है तो दूसरी गांठ खुल जाती है फिर अगर नमाज़ पढ़े तो तीसरी गांठ खुल जाती है। इस तरह सुबह के वक़्त इन्सान तरोताज़ा और सुस्वभाव रहता है वरना सुस्त और दुष्प्रवृत्त रहता है। (सहीह बुखारी-११४२)

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम.....

पिता का नाम.....

स्थान.....

पोस्ट आफिस.....

वाया.....

तहसील.....

जिला.....

पिन कोड.....

राज्य का नाम.....

मोबाइन नम्बर.....

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताःअहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6

बैंक और एकाउन्ट का नामः

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।

कुरआन में सदव्यवहार की शिक्षाएं

प्रो० डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी

कुरआन सद्व्यवहार तथा सदाचार का इन्साइकलोपीडिया है, जिनको कुछ पृष्ठों में समाहित करना असम्भव है। इसलिए यहां कुछ का वर्णन किया जा रहा है।

प्रेम और दयालुता

''यह भी उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारी ही सहजाति से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा की और निश्चय ही इसमें बहुत-सी निशानियां उन लोगों के लिए हैं, जो सोच-विचार करते हैं'' (सूरा-३०, अर-रूम, आयत-२१)

एक-दूसरे का सहयोग करना

''ऐसा न हो कि एक गिरोह की शत्रुता, जिसने तुम्हें मस्जिदे-हराम से रोक दिया था, तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम ज़्यादती करने लगो। पुण्य कर्मों तथा ईश-भय के काम में तुम एक-दूसरे का सहयोग करो और अपुण्य कर्मों और एक-दूसरे पर अत्याचार करने पर सहयोग मत करो। अल्लाह का भय रखो। निश्चय ही अल्लाह बड़ा कठोर दण्ड देने वाला है।'' (सूरा-५, अल-माइदा, आयत-२)

लोगों से भली बात करना

अल्लाह ने बनी-इसराईल से जो वचन दिया था, उसमें भली बात करना भी शामिल था, परन्तु उन्होंने इसको भंग कर दिया।

''याद करो जब इसराईल की सन्तान से हमने वचन लिया था कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की बन्दगी न करना, और मां-बाप के साथ, नातेदारों के साथ, अनाथों तथा निर्धनों के साथ अच्छा व्यवहार करना और यह कि लोगों से भली बात करना और नमाज़ का आयोजन करना और ज़कात देना। तो तुममें थोड़े से (लोग) ही इन बातों पर स्थिर रहे और अधिकतर लोग इनसे फिर गए।'' (सूरा-२, अल-बक़रा, आयत-८३)

बुराई का सुधार भलाई से करना

एक मुसलमान को अत्यन्त सहनशील तथा कोमल स्वभाव होना चाहिए, जो बुराई का जवाब बुराई से नहीं, बल्कि भलाई से दे। इसी की ओर कुरआन संकेत करता है।

''अच्छे आचरण और बुरे आचरण समान नहीं होते। इसलिए बुरे आचरण को अच्छे आचरण से दूर करो फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच बैर था जैसे वह कोई घनिष्ट मित्र हो और यह बात केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जिन्होंने धैर्य से काम लिया। और उन लोगों को प्राप्त होती है जो बड़े भाग्यवान होते हैं। और यदि शैतान के उसकाने से कभी तुम्हारे अन्दर उकसाहट पैदा हो तो अल्लाह की पनाह मांगो। निस्सन्देह वह सुनने और जानने वाला है।'' (सूरा-४१, हा-मीम अस

सजदा, आयतें-३४-३६)

ठीक और सीधी बात करना

'' ऐ इमान वालो! अल्लाह से डरते रहो, और बात कहो तो ठीक और सीधी कहो। वह तुम्हारे कर्मों को संवार देगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और जिसने अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन किया, उसने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली। (सूरा-३३, अल-अहज़ाब, आयतों-७०,७१)

सफलता प्राप्त करने वाले मोमिनों के लक्षण

❑ सफल हो गए ईमान वाले

❑ जो अपनी नमाज़ों में नम्रता अपनाते हैं।

❑ और जो व्यर्थ बातों से बचने वाले हैं।

❑ और जो ज़कात अदा करते हैं।

❑ और जो अपनी शर्मगाहों (गुप्तांगों) की रक्षा करते हैं। सिवाय अपनी पत्नियों के और लौंडियों के, जो उनके अधिकार में हों। इस दशा में वे निन्दनीय नहीं हैं। परन्तु जो कोई इसके अतिरिक्त कुछ और चाहे तो ऐसे ही लोग सीमा से आगे बढ़ने वाले हैं।

❑ और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं।

❑ और जो अपनी नमाज़ों को सही समय पर अदा करते हैं।

❑ यही लोग वारिस होंगे, जो विरासत में फिरदौस पाएंगे। वे उसमें सदैव रहेंगे। (सूरा-२३, अल-मोमिनून, आयतें-१-११)

क़र्ज लेने वाला अगर तंगी में पड़ जाए तो उसको कुछ अवसर देना।

''यदि कर्ज़ लेने वाला तंगी में पड़ जाये, तो उसका हाथ खुलने तक उसे समय दो। और अगर दान कर दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा होगा, अगर तुम जानते हो''। (सूरा-२, अल-बकरा, आयत-२८०)

अर्थात् कर्ज़ लेने वाला निश्चित समय पर कर्ज़ न लौटा सके तो उसको कुछ और समय दे दो और अगर तुम अनुभव कर लो कि अब वह कर्ज वापस नहीं कर सकता, तो क्षमा कर दो। जो बहुत बड़ा पुण्य कर्म है। इस बात को जानना चाहिए।

मतभेद की दशा में अल्लाह तथा उसके रसूल की ओर रूजू करना

''ऐ ईमान वालो! अल्लाह की आज्ञा का पालन करो, और रसूल का कहना मानो, और उसका भी कहना मानो जो तुम्हारा अधिकारी हो। फिर यदि तुम्हारे बीच कोई मतभेद हो जाए तो अल्लाह और उसके रसूल की ओर पलटो।'' (सूरा-४, अन-निसा, आयत-५९)

अर्थात कैसी भी समस्या हो, उसको हल करने के लिए अल्लाह की किताब कुरआन, और नबी की सुन्नत की ओर रूजू करना चाहिए, क्योंकि मुसलमानों के मार्गदर्शन के यही दो स्रोत हैं।

मजलिस में कुशादगी पैदा करना ''ऐ ईमान वालो, जब तुमसे कहा जाए, मजलिसों में जगह कुशादा कर दो। तो कुशादा कर दो। अल्लाह तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा कर देगा। और जब तुमसे कहा जाए, उठ जाओ। तो उठ जाया करो। तुममें से जो ईमान लाए और उन्हें ज्ञान प्रदान किया गया, अल्लाह उनके दर्जो को उच्चता प्रदान करेगा। जो

तुम करते हो, अल्लाह उसकी पूरी खबर रखता है''। (सूरा-५८, अल-मुजादला, आयत-११)

मजलिस में कुशादगी का अर्थ है कि इस प्रकार बैठा जाए कि दूसरों को भी स्थान मिल जाए।

नीची निगाहें रखना

''ईमान वालों से कहो, वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की रक्षा करें। यह उनके लिए बहुत पवित्रता की बात है। निस्सन्देह अल्लाह उनके कर्मों से परिचित है। (और इसी प्रकार) ईमान वाली स्त्रियों से कहो, ''वे अपनी निगाहों को नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की रक्षा करें'' (सूरा-२४, अन-नूर, आयतें ३०-३१)

भली बात कहना उस दान से उत्तम है जिसके पीछे दुख हो।

''भली बात कहना, और क्षमा से काम लेना उस सदके से उत्तम है जिसके पीछे दुख देने की बात हो। और अल्लाह निस्पृह और सहनशील है''। (सूरा-२, अल-बकरा, आयत-२६३)

अर्थात किसी को दान तथा सदक़ा देकर इसका एहसान जताना दुख पहुंचाने के समान है। इससे उत्तम तो यही था कि केवल भली और अच्छी-अच्छी बातें कर ली जातीं।

फक़ीर (मोहताज) की बेनियाज़ी

''यह उन फक़ीरों (मोहताजों) के लिए है जो अल्लाह की राह में घिरे हुए हैं। (जीविका के लिए) धरती में दौड़-भाग नहीं कर सकते। उनके स्वाभिमान के कारण अनभिज्ञ लोग उनको धनवान समझते हैं। तुम उनके लक्षणों से उन्हें पहचान सकते हो। वे लोगों से चिमट-चिमटकर नहीं मांगते। और जो धन भी तुम ख़र्च करोगे तो निस्सन्देह अल्लाह उसका जानने वाला है''। (सूरा-२, अल-बक़रा, आयत-२७३)

नबी फकीरी में भी लोगों से बेनियाज़ी की दुआ करते थे।

''ऐ अल्लाह अपने अतिरिक्त किसी और का मोहताज न बना'' (देखिएः तिर्मिज़ी ५६६३ तथा हाकिम १:५३८)

धैर्य के द्वारा सफलता प्राप्त करना

''धैर्य और नमाज़ से सहायता लो, निस्सन्देह नमाज़ है तो बहुत कठिन, परन्तु उन लोगों के लिए नहीं जिनके दिल अल्लाह से भयभीत हैं''। (सूरः२, अल-बक़रा, आयत-४५)

''ऐ ईमान वालो! धैर्य और नमाज़ से सहायता लो। निस्सन्देह अल्लाह धैर्यवानों के साथ है''। (सूरा-२, अल-बक़रा, आयत-१५३)

''निस्सन्देह हम तुम्हारी परीक्षा लोंगे कुछ भय से, कुछ भूख से, कुछ जान-माल और पैदावार की कमी से। (ऐसी दशा में) धैर्यवानों को शुभ-सूचना दे दो। ये वे लोग हैं कि जब इन्हें कोई कष्ट पहुंचता है तो कहते हैं, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन (अर्थातः निस्सन्देह हम अल्लाह ही के लिए हैं, और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं यही लोग सीधे मार्ग पर चलने वाले हैं। (सूरा-२, अल-बकरा, आयतें १५५-१५७)

प्रशिक्षण की महत्ता

डा० मुक़तदा हसन अज़हरी रह०

इस्लाम की दृष्टि में प्रशिक्षण की समस्या अति महत्वपूर्ण है। प्रशिक्षण से ही मनुष्य प्रगति के चरम शिखर पर पहुंचता है। आगामी जीवन में शरीअत की पाबन्दी तथा उचित मार्ग पर सन्तुलित रहने का आधार प्रशिक्षण पर ही निर्भर है। प्रारम्भिक जीवन में जब पुण्य कार्यों से लगाव तथा बुराइयों से घृणा हो जाती है तो उसका प्रभाव जीवन भर बना रहता है।

माता-पिता, तथा अभिभावक एवं शिक्षक जिनसे भी शिक्षा-दीक्षा का सम्बन्ध है उनको इस्लाम ने जिम्मेदार बनाया है तथा इस विषय में भरपूर प्रयास करने का सुझाव दिया है। कुरआन में है कि

मोमिनो! स्वंय को तथा अपनी सन्तान एवं परिवार को नरक की आग से बचाओ। (सूरः मरयम आयत-६) निश्चय ही नरक से बचने का उपाय यही है कि माता-पिता अपनी सन्तान को इस्लामी शिक्षाओं पर व्यवहार करने के योग्य बनायें तथा बुराइयों से दूर रहने की शिक्षा दें।

बुखारी तथा मुस्लिम की एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल स० ने कहा कि पुरूष अपनी सन्तान तथा परिवार का जिम्मेदार व्यक्ति है। तथा पत्नी अपने पति के घर की रक्षक है एवं जिम्मेदार है, दोनों से उनके अधीन लोगों के सम्बन्ध में प्रश्न होगा।

यही कारण है कि प्रत्येक युग में मुसलमानों ने सन्तान के प्रशिक्षण पर ध्यान दिया स्वंय भी प्रयास किया तथा शिक्षा-दीक्षा के लिए शिक्षक भी नियुक्त किये।

माता-पिता तथा प्रशिक्षण

सन्तान के प्रशिक्षण में माता-पिता का दायित्व अति महत्वपूर्ण है। बच्चा स्कूल जाने से पूर्व बचपन का एक लम्बा समय माता-पिता तथा निकट सम्बन्धियों के साथ व्यतीत करता है तथा उन्हीं से शिष्टाचार एवं सदव्यवहार सीखता है मां की गोद बच्चे की प्रथम पाठशाला है। जन्म से पांच छः वर्षों तक का समय जो बच्चा माता-पिता के साथ व्यतीत करता है देखने में यह अल्प समय लगता है, परन्तु अनुभव बताता है कि यही समय सबसे अधिक मूल्यवान है। इस काल में उसे जो शिक्षा-दीक्षा दी गई है उसका असाधारण प्रभाव होता है। हदीस शरीफ में इसीलिए बच्चों से सम्बन्धित बहुत सी शिक्षायें इसी काल से आरम्भ कर दी गयी हैं।

इस अवस्था के महत्व को देखते हुए इस्लाम ने माता-पिता को सन्तान की शिक्षा-दीक्षा का जिम्मेदार ठहराया है तथा उनका मार्गदर्शित किया है कि वे अपनी शिक्षाओं एवं अपने चरित्र व व्यवहार से बच्चों को उचित मार्ग पर ले चलें तथा शरीअत के आदेशों के अनुसार उनके चरित्र का निर्माण करें।

प्रारम्भिक काल में बच्चों की शिक्षा-दीक्षा पर ध्यान न देने से उसके अति कुपरिणाम होते हैं तथा इस दोष से माता-पिता को मुक्त नहीं किया जा सकता। एक व्यक्ति ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो के पास आकर अपने लड़के के अभद्र व्यवहार की शिकायत की।

लड़के ने हज़रत उमर रजियल्लाहो अन्हो से पूछा कि अमीरूल मोमिनीन! (मुसलमानों के शासक) बाप पर बेटे का क्या अधिकार है? उन्होंने उत्तर में कहा कि बाप को चाहिए कि बेटे के लिए अच्छी मां का चुनाव करे, अर्थात पवित्र स्त्री से विवाह करे ताकि सन्तान अच्छी पैदा हो, तथा बच्चा पैदा हो तो अच्छा नाम रखे और उसे कुरआन की शिक्षा दे।

यह सुनकर लड़के ने कहा कि मेरे बाप ने इसमें से कोई कार्य नहीं किया है मेरी मां हबशी है तथा एक मजूसी के अधिकार में थी और मेरा नाम खनफसा (कीड़ा) रखा, तथा कुरआन का एक अक्षर भी मुझे नहीं सिखाया।

हज़रत उमर रजियल्लाहो अन्हा ने लड़के की बात सुनकर पिता की ओर ध्यान दिया और कहा कि तुम अपने लड़के की अव्यवहारिकता की शिकायत लेकर आये हो, परन्तु इससे पूर्व तुम स्वंय इसके साथ अव्यवहारिकता का परिचय दे चुके हो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हा के इस उत्तर से इस बात का संकेत मिलता है कि अच्छे चरित्र एवं व्यवहार के लिए बच्चों की उचित देख-रेख आवश्यक है।

प्रशिक्षण के विषय में मां की भूमिका अति महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, क्योंकि पिता की अपेक्षा मां का सम्बन्ध बच्चे से अधिक होता है। एक अरबी कवि अपनी कविता में मां की स्थिति का चित्रण इस प्रकार करता है।

हज़रत उमर रजि० ने लड़के की बात सुनकर पिता की ओर ध्यान दिया और कहा कि तुम अपने लड़के की अव्यवहारिकता की शिकायत लेकर आये हो, परन्तु इससे पूर्व तुम स्वंय इसके साथ अव्यवहारिकता का परिचय दे चुके हो। हज़रत उमर रजि० के इस उत्तर से इस बात का संकेत मिलता है कि अच्छे चरित्र एवं व्यवहार के लिए बच्चों की उचित देख-रेख आवश्यक है।

अनुवाद- मां एक पाठशाला है, इसे यदि बना लो तो एक अच्छा राष्ट्र तैयार हो जाएगा।

मुस्लिम प्रशिक्षण विशेषज्ञों का विचार है कि बच्चे का पालन-पोषण स्वयं मां को करना चाहिए। उसे किसी दाई या अन्य पेशेवर पालने वालों के हवाले नहीं करना चाहिये, क्योंकि बच्चे को जो प्यार मां से मिलेगा वह अन्य से नहीं। चिकित्सकीय तथा वैज्ञानिक रूप से यह सिद्ध हो चुका है कि शारीरिक तथा चारित्रिक रूप से बच्चा, दूध पिलाने वाली महिला का प्रभाव अधिक ग्रहण करता हैं अतः यदि बच्चे को आया या दाई के हवाले करना आवश्यक हो तो ऐसी स्थिति में धार्मिक एवं पवित्र विचारधारा की महिला जो शिक्षा-दीक्षा की जानकार हो उसका चुनाव करना चाहए। प्रशिक्षण के विषय में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि माता-पिता बच्चे के साथ कड़ाई तथा नरमी बरतने में सन्तुलित ढंग से काम लें। प्रत्येक समय या अवसर पर बच्चे से नाराज़ रहना या बात-बात पर डांटना, या झिड़िकना इससे बच्चे में गलत भावनायें उत्पन्न होती हैं तथा बच्चे के साथ अधिक प्यार भी उसे गलत मार्ग पर डाल देता है। इसलिये आवश्यक है कि माता-पिता, विशेषकर मां, बच्चे के साथ कड़ाई ताथा नरमी में सन्तुलित मार्ग अपनाये ताकि बच्चा उचित मार्ग पर कायम रहे।

''इस्लाम और औरत''

मुहताजों का पालन पोषण

डा० रफीउल्लाह मस्ऊद तैमी

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस बयान करते हैं कि अल्लाह के सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से एक आदमी ने पूछा कि इस्लाम की कौन सी बात सबसे बेहतर है। आप स०अ०व० ने फरमायाः भूखे आदमी को खाना खिलाना, और हर जाने अन्जाने शख्स को सलाम करना। (बुखारी)

इस्लाम खूबियों का संग्रह है इनसे वही शख्स फायदा उठाता है जो इस्लाम को दिल व जान से प्रिय रखता है और इस्लाम के बताये गये आदर्शों के अनुसार जीवन गुजारता है जब कोई उससे नफरत करेगा, उसके खिलाफ प्रोपैगण्डा करेगा और उस पर दोषारोपण करेगा तो ऐसे लोगों की निगाह में इस्लाम की खूबियां अर्थहीन हो जाती हैं और ऐसे लोग इस्लाम की खूबियों से फायदा नहीं उठा पाते हैं। यह हकीकत भी है कि जब दिल में किसी चीज से घृणा और नफरत होगी तो उसकी खूबियां बुराईयों में बदल जाती हैं और हर भली बात बुरी लगती है इस्लाम की खूबियों का खजाना वही पा सकता है जो उसको सच्चे मन से पढ़े।

इस हदीस में इसलाम की खूबी यह बतायी गयी है कि भूखे को सच्चे दिल से खाना खिलाया जाये और यह कर्म अल्लाह को खुश करने और उसका शुक्रिया अदा करने के लिये किया जाये। कुरआन में ऐसे लोगों की खूबी बयान की गयी है। कुरआन में अल्लहा तआला ने फरमाया है।

''और अल्लाह की मुहब्बत में मिस्कीन, यतीम और कैदियों को खाना खिलाते हैं, हम तो तुम्हें केवल अल्लाह की रिजामन्दी के लिये खिलाते हैं न तुमसे बदला चाहते हैं न शुक्रगुज़ारी''। (सूरे-दह्र-८-९)

टीकाकारों ने लिखा है कि माल से मुहब्बत के बावजूद ज़रूरत मन्दों मुहताजों को खाना खिलाते हैं और कैदी गैर मुस्लिम हो तब भी उसके साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद है बदर के कैदियों के बारे में अल्लाह के रसूल स०अ०व० ने सहाबा किराम को आदेश दिया कि उनकी मेहमान नवाजी करो सहाबा किराम अर्थात आप के प्यारे साथी कैदियों को खिलाने के बाद में खाते थे। (इब्ने कसीर) इसी तरह सेवक के बारे में भी कहा गया है कि उनके साथ सदव्यवहार किया जाये।

हदीस में जाने अनजाने सबसे सलाम करने को इस्लाम की खूबी बतायी गयी है सलाम करना और उसको समाज में फैलाना इस्लाम की एक ऐसी खूबी है जिससे खुशगवार माहौल बनता है प्यार मोहब्बत बढ़ती है नफरत खत्म होती है, दुश्मनी खत्म होती है, सूसाइटी में भाई चारा बढ़ता है।

दहेज की समस्या

एन.अहमद

दहेज की रस्म अब भयानक रूप अपनाती जा रही है, कुछ समाजिक संगठनों की तरफ से रोकने की कोशिश हो रही है लेकिन दहेज का प्रकोप थमने का नाम नहीं ले रहा है। दहेज के नाम पर महिलाओं के साथ मार पीट और उत्पीड़न आदि का सिलसिला जारी है कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता होगा जिसमें किसी न किसी समाचार पत्र में दहेज के मामले को लेकर उत्पीड़न की खबर न आती हो गी।

रिपोर्टों के अनुसार दहेज की सबसे ज्यादा भायावह शक्ल एशिया में है और आये दिन दहेज की रस्म मंहगी से मंहगी होती जा रही है, अब तो यह स्थिति पैदा हो गयी है कि जिस परिवार में लड़कियां ज्यादा होती हैं तो उस परिवार की पूरी जिन्दगी की कमाई दहेज में खर्च हो जाती है और ज़्यादा तर उध ाार लेने की नौबत आती है जो परिवार मालदार होता है उसको तो ज़्यादा नहीं खलता है लेकिन जिस परिवार को दो वक्त की सही से रोटी न नसीब न हो उसके लिये दहेज की रस्मों को पूरा करना कोई आसान काम नहीं है, जिन्दगी का अधिकतर वक्त दहेज की रस्मों को पूरी तरह अदा करने के लिये सामान जुटाने में ही लग जाता है।

एक खबर आई थी कि तीन बहनों ने दहेज की वजह से अपने आप को मार डाला। तीनों लड़कियां पढ़ी लिखी थीं, लेकिन दहेज की वजह से उनको रिश्ता नहीं मिल रहा था। तीनों बहनें परेशान थीं। यह सिर्फ एक वाक्या है अब तो दहेज देने के बाद भी सुख नहीं मिल रहा है। इन्सान के मन को कौन भर पाये गा दहेज की कोई मामूली चीज़ नहीं मिल पाती है तो उसको बुनियाद बनाकर लड़कियों को प्रताड़ित करना शुरू कर दिया जाता है।

एक रिश्ते का चश्मदीद (आंखों देखा) गवाह रह चुका हूं। लड़की वालों की तरफ से कहा गया कि अगर कोई मांग मुराद हो तो पहले ही बता दो, बेहतर रहेगा। लड़के के जिम्मेदारों ने कहा कि हमारी कोई मांग मुराद नहीं है, लेकिन जब वक्त करीब आया शादी के पहले की कुछ रस्में निभाने की बात आयी तो फिर दिल की असल बात जुबान पर आ गयी। लड़की वाले जब मिठायी और दूसरा सामान लेकर पहुंचे तो कहा गया अब तो घास छीलने वाला भी दो पहिया गाड़ी पाता है, कहने का मतलब यह था कि जब अनपढ़ दो पहिया गाड़ी पाता है तो हमारा बेटा पढ़ा लिखा है, सरकारी नौकरी है, अच्छा घर मकान है तो उसे चार पहिया गाड़ी ज़रूर मिलनी चाहिये। इस लिये अब तो पहले ही से लड़की के बाप को या उसके जिम्मेदार को दहेज के बारे में पूरी तरह पहले

ही से जानकारी देनी पड़ती है, क्योंकि उसे मालूम है कि अगर हमारी तरफ से आफर नहीं किया गया तो नुकसान हम ही को भुगतना पड़ेगा। कहने का मतलब यह है कि शादी बिजनस बनती जा रही है, बड़ी पार्टी बड़ी पार्टी को देखती है, बहुत कम ही ऐसा होता है कि लोग एक दूसरे की दीनदारी के बारे में मालूमात करते होंगे, लड़का कैसा है, लड़के का रहन सहन कैसा है, दीनदार है कि नहीं, कैसे लोगों के साथ उठना बैठना होता है, बस अगर पैसे वाला है, मजबूत है, तो फिर लड़की का बाप भी अपनी दौलत के सहारे अपनी लड़की को ऐसे परिवार के हवाले करने पर तैयार हो जाता है, यही मामला लड़के वालों का भी है, यह भी अब देखने लगे हैं कि औरत बड़े घराने की होनी चाहिये दौलत होनी चाहिये, दीनदारी चाहे रहे या न रहे।

जब किसी भी समाज में इस तरह की सोच पैदा हो जाये गी तो फिर हम यह कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि समाज दहेज के इस प्रकोप (अज़ाब) से छुटकारा पा जायेगा।

यह तो सिर्फ लेन देन की बात है बारात के नाम पर आज जो तूफाने बदतमीजी चल रही है वह भी समाज को दीमक की तरह चाट रही है, जब लड़की का बाबुल यह पूछता है कि बारात कितने लोग आओ गे तो कम ही ऐसा होता है कि उसको सही तादाद बतायी जाती हो। कहने को तादाद तो पहले से निधार्रित कर दी जाती है लेकिन शादी के दिन दूध का दूध और पानी का पानी अलग हो जाता है।

बताया जाता है कि केवल पचास आदमी आयेंगे, लगभग सौ लोग आयेंगे, बहुत ज़्यादा आयेंगे तो १५० लोग आयेंगे, लेकिन शादी वाले दिन लड़की के बाप की परीक्षा ली जाती है उसकी रईसी और मालदारी का इम्तिहान लिया जाता है, यह देखा जाता है कि अगर अपने बताये तादाद से १००-१५० ज़्यादा आ जाते हैं तो लड़की का बाप यह बोझ सह पायेगा कि नहीं। लड़की का बाप मरता क्या न करता वह तमाम बारातियों के खर्च को बदार्शत करता है क्योंकि उसे मालूम है कि अगर हमने थोड़ी भी कोहताही की तो हमारी इज्ज़त की खैर नहीं, यह उस समाज की बात हो रही है जिसके यहां से खरे खोटे की तमीज़ खत्म होती जा रही है। लड़की का बाप मालदार है तो वह गरीब दामाद दूढ़ना पसन्द नहीं करता क्योंकि उसे तो समाज को यह बताना है कि मैंने अपनी हैसियत के बराबर वाले खानदान में शादी की है, चाहे लड़का पढ़ा लिखा दीनदार हो न हो, लेकिन ऐसे मालदार लोग पढ़े लिखे और दीनदार दामाद पर ध्यान देने को वरीयता नहीं देते हैं क्योंकि उनको ऐसे खानदान की ज़्यादा परवाह नहीं होती है।

चाहे बारात की रस्म हो या दहेज की या दहेज के पहले की, यह सब व्यर्थ चीज़ें हैं, समाज को इन व्यर्थ चीजों में न पड़ कर ऐसे रस्मों रिवाज के खिलाफ आवाज़ उठानी चाहिये क्योंकि यह सब रस्में समाज के समीकरण को बिगाड़ रही हैं जो पूरे समाज के लिये घातक है।